॥ वन्देमातरम् ॥

नवीन राजस्थान

एक साल का मू० ३॥)
छः मास का मू० २)

सहस्रबाहुस्त्वमहं द्विबाहु स्त्वं सैन्ययुक्तो ह्यहमेक एव ।
त्वं चक्रवर्ती 'जनसेवकोऽहं; तथापि नौ पश्यतु तर्कमर्कः ॥

सम्पादक डा० केसरबर्मा

वर्ष १] अजमेर; आषाढ़ शुक्ला १५ रविवार ता० ९ जुलाई १९२२ ई० [संख्या २४

बेगूँ में बेगार की बलि

गत आषाढ़ कृष्ण अमावस को बेगूं के रावजी ने भील आदि ग़रीब जाति के लोगों को शिकारमें हाका देने के लिए बेगार में [illegible] बुलाया। शेर निकला। परन्तु राव जी उस समय किसी से विवाद में लगे हुए थे। अतः किसी दूसरे व्यक्ति ने गोली चला दी और फल स्वरूप शेर ज़ख्मी होकर एक गढ़े में गिर पड़ा। अब यह पता लगाने की जरूरत हुई कि वह किस जगह पड़ा है। किन्तु ज़ख्मी शेर के पास जाने को कोई तयार नहीं था। अन्त में दो भील बेगारियों को नादिरशाही हुक्म दिया गया कि तुमको जाना पड़ेगा। इनमें एक राजगढ़ का तारा भील था और दूसरा झोंपड़ियों का चन्दा नामक भील था। बिचारे भील डरते डरते गये और एकस्मात शेर के बहुत निकट जा पहुंचे। ज़ख्मी शेरने एक दम आक्रमण किया। चन्दा का गला पकड़ लिया और उसके सिर पर काट खाया जिससे सिर का बहुतसा हिस्सा फट गया। उसके बाद तारा की कलाई चबा डाली। दोनों के जीवित बचने की आशा नहीं है। रियासतों में केवल अमीरों के मनोरंजन के लिए किस तरह गरीबों की कुरबानियां की जाती हैं उसका यह एक छोटा सा नमूना है।

बूंदी के एक सत्याग्रही की वीरता

बूंदी के नमाना गांव में जो किसानों की पंचायत हुई थी उसमें [illegible] नामक गांव का प्रताप डाकोत सरपंच बनाया गया था। इसी जुर्म पर अधिकारियों ने उसे गिरफ़ार कर लिया और उससे यह इकरारनामा लिखाना चाहा कि भविष्य में वह किसी पंचायत और आन्दोलन में भाग न ले। उसने उत्तर दिया कि आंदोलन कष्टों के लिए है। उनके दूर होने पर ही मैं उससे अलग हो सकता हूं। इस पर वह तोप के सामने खड़ा किया गया। प्रताप ने निर्भीकता पूर्वक कड़क कर कहा "अब देर क्यों करते हो? मैं अपनी बात से नहीं हटूंगा। अतः तोप में बत्ती देकर तुम अपना काम पूरा क्यों नहीं करते? अन्त में जब वह किसी प्रकार न डरा तब बूंदी जेल में भेज दिया गया। प्रताप का साहस निस्सन्देह अनुकरणीय है। बूंदी राज्य के लांबाखोह में गिरफ्तार होनेवाले पंडित हरदेव प्रसाद को पाठक भूले न होंगे। हमें खबर मिली है कि उन्हें उनके साथी १७ कैदियों से अलग देवरा नामी स्थान पर कैद किया गया है और सुना है केवल छः छटांक जुवार चबाने को दी जाती है शेष १७ कैदियों में से दो ब्राती तीन भील और एक महाजन छोड़े गए हैं।

अजमेर में भीषण असन्तोष

म्यूनिसिपेल टैक्सों की वृद्धि!

विरोध के लिये विराट सभा! ता० ५-७-२२ ई० को म्यूनिसिपल कमेटी की ओर से कर वृद्धि के नोटिस चिपकाये और बांटे गये थे। जिन्हें पढ़ कर ता०-६-७-२२ को कांग्रेस और खिलाफत कमेटी की ओर से उसके विरोध के लिये नया बाजार के चौक में एक विराट सभा श्री युत पं० चन्दूलाल के सभापतित्व में १० बजे रात को हुई। उपस्थिति लगभग १५०० थी। कई महानुभावों के पुरजोर व्याख्यान हुए। करीबन सभी ने कहा कि स्थानीय म्युनिसिपेलटी का यह प्रबन्ध अच्छा नहीं है। सारी गलियां हमेशा गंदी रहती हैं और शहर की सड़कें भी खराब हालत में रहती हैं। यदि म्युनिसिपेलटी का प्रबन्ध है तो साहबों के बंगलों पर और उन के हवा खाने की सड़कों पर अतएव इसको रुपय देना सरासर नासमझी है। इस के अतिरिक्त अजमेर सरहद्द से ३० मील या इस से अधिक दूर से पुष्कर स्थान व ख्वाजा साहब की इबादत के लिये जो टैक्स की मुसाफिर का लिया जाना हमारे धर्म में बाधा डालना है और यह अजमेर निवासियों के लिये बड़े शर्म की बात होगी। व्याख्यानों के अलावा निम्न लिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुए:—

१ अजमेर निवासी म्युनिसिपेलटीके कर वृद्धि को नाराजगी और घृणा की दृष्टि से देखते हैं और इस का घोर विरोध करते हैं।

२ अजमेर निवासी खुले शब्दों में घोषणा करते हैं कि यदि जनता के विरोध का कुछ भी ख्याल न करते हुए ये टैक्स बढ़ाये गये तो हम एक मत हो कर अदायगी टैक्स से कतई इनकार कर देंगे।

३ अजमेर निवासियों की इस विराट सभा की घोषणा का यदि मेम्बरान कमेटी ने आदर नहीं किया तो हम उन अख्त्यारों को काम में लावेंगे जो हम को उन पर हासिल हैं।

उदयपुर जेल में कैदी मरा!

हमने सुना है कि बेगूं का भूरा नामक एक ब्राह्मण कैद था वह मर गया। अफवाह गरम है कि वह पहले दिन पीटा गया था। दूसरे दिन मर गया। हम जानना चाहते हैं कि उस की मृत्यु में और एक दिन पहले की मार पीट में खास सम्बन्ध है या नहीं?

IV 907

अन्तर्राष्ट्रीय चक्रव्यूह

शकटव्यूह में डी वेलरा

अभिमन्यु का अन्याय पूर्वक वध कर डालने पर क्रुध होकर जिस प्रकार अर्जुन ने जयद्रथ वध की प्रतिज्ञा की थी उसी प्रकार अंगरेजों के फ्रीस्टेट के ढकोसले की आड़ में आयरिश स्वाधीनता की हत्या करने का प्रयत्न देख कर आयरिश प्रजातंत्र के अध्यक्ष डीवेलेरा ने आयरिश फ्रीस्टेट के ढकोसले को तोड़ डालने की प्रतिज्ञा कर ली है। बीचमें ख़बर मिली थी कि दोनों दलों में कुछ सन्धि होजाने की आशा है परंतु ज्ञात होता है कि सरकार पर सन्धि की आड़ में अपने शकटव्यूह को मजबूत करती जाने का सन्देह होने के कारण प्रजातंत्रवादियों ने अपना प्रयत्न बन्द नहीं किया था। इधर ब्रिटिश मंत्रीमंडल के शकुनि मि० लायड जार्ज और मिस्टर चर्चिल ने यह स्पष्ट घोषित कर दिया कि यदि नई सरकार प्रजातंत्रवादियों का दमन न कर सकी तो सरकार संधि टूटी हुई मान लेगी। इसका फल यह हुआ कि आयर्लेंड के दल आपस में ही भिड़ पड़े पता नहीं स्वतंत्र राष्ट्रवादियों को गवर्नमेंट की ओर से क्या क्या सहायता मिली। परंतु हाउस आफ़ कामन्स में मिस्टर चर्चिल ने शुरू में ही कह दिया था कि यदि हम आवश्यक समझेंगे तो इन्हें युद्ध सामग्री की सहायता देंगे—इन सब कारणों से लड़ाई की अवस्था पैदा हो गई। २७ जून को प्रजातंत्रवादियों ने डबलिन से डारी जाने वाली ट्रेन को रोका और बेलफास्ट की डाक का थैला मांगा—किन्तु बांछित थैले की बजाय फौजी डाक का थैला हाथ पड़ गया जिसे उन्होंने खोला और ३ घंटे में देख भाल कर के दूसरी ट्रेन से भेज दिया। इसी दिन स्वतंत्र राष्ट्रीय सेना ने बेलफास्ट बायकाट के डाइरेक्टर कमांडेंट (जो आयरिश प्रजातंत्रवादी सैनिकों के आफीसर थे) मि० हैंडरसन को गिरफ़्तार कर लिया। इस घटना से प्रजातंत्रवादियों की सरकार जो फोरकोर्ट में कब्जा किए हुई थी और भी भड़क उठी। इधर स्वतंत्र राष्ट्रीय सेनाएँ उसे फोरकोर्ट खाली करने के लिए दबाने लगी। इसी दिन प्रजातंत्रवादी, स्वतंत्र राष्ट्रवादी डीवेलरा और मि० चर्चिल आदि ने अपने अपने पक्ष की पुष्टि करने और सचाई बताते हुए घोषणाएँ निकालीं। इसके पश्चात ३॥ बजे प्रातः जनरल एनेस की अध्यक्षतामें ईस्टर्न डीविज़न की सेना फोरकोर्ट की बिल्डिंग के सामने पहुंची और प्रजातंत्रवादियों को आध घंटे में आत्मसमर्पण करने की आज्ञा दी। जब उसका कुछ उत्तर नहीं मिला तो गोलियां चलानी शुरू कीं। पहला हमला जनरल ओकोनार के कार्यालय फलावर मेमोरियल हाल पर हुआ। लगभग चार घंटे तक मशीनें और बन्दूकें ट्रेंच मोटरों और दूसरे तरीकों से चलती रहीं। ऊपर से बम भी गिराए गए। दुपहर बाद रावर हाल में आग लग गई और उसी दिन जनरल ओकोनर गिरफ़्तार कर लिए गए। उस दिन दिन भर लड़ाई चलती रही बहुत से सिविलियन मारे गए। दर्शकों में से कईयों के गोलियां लगीं। उसी दिन ख़बर आई कि प्रजातंत्र की रक्षा के लिए लड़के बड़े जोश से काम कर रहे हैं और अंत तक लड़ेंगे। गलियों पर फोरकोर्ट के चारों ओर लोग भी खड़े हुए लड़ाई देख रहे थे। यह भी कहा जाता है कि फलावर हाल के पीछे वाले हाल में जो साम्यवादियों की संस्था थी वह भी इस लड़ाई में सहायता पहुंचा रही थी। इसी दिन जगह जगह तार काट डाले गए। कई जगह रेलों और डाक का आना बन्द होगया। और आयरलेंड के प्रायः सभी दक्षिणी भाग में व्यवस्थित विद्रोह फैल गया। लड़ाई के क्रम बद्ध समाचार जो कुछ मिले हैं वे इस प्रकार हैं:—

इधर स्वतन्त्र राष्ट्र की फौजों ने 'फोर कोर्ट' के भवन पर भयंकर बम चलाए। बमसे भवन की खास दीवारें टूट गयी और इससे भीतर जानेमें सेनाएं समर्थ हुईं। १ बजे रातमें सेनाएं भीतर घुसीं। स्वतन्त्र राष्ट्र की सेनाएं टूट पड़ीं और फिर हाथापाई लड़ाई होने लगी। तारों को बागियों ने काट दिया। ३३ कैदी पकड़े गये। इसमें प्रसिद्ध बागी 'बारो' भी है। बहुत सा बारूद और तोप छीने गये हैं। बागियों के सरदार रारी और ओकानार और विलियम मेलोवीज डेढ़ सौ अनुयाइयों के साथ भवन के पीछे अब भी डटे हुए हैं। सवेरे पौने चार बजे भयंकर तोपें चलाई गई स्वतन्त्र राष्ट्र की सेनाओं के चार आदमी मरे और १४ घायल हुए।

प्रजातन्त्रवादी क्रांतिकारी सेनाके १३ नेताओं ने जिनमें ओकानर और मेलोवेज भी शामिल हैं यह घोषणा निकाली है कि सब नागरिकों को प्रजातन्त्र की सहायता में जुटना चाहिये। इससे बड़ी भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

सबेरे लड़ाई में शिथिलता रही। दो पहर ११ बजे नदी के दोनों तरफ़ और 'फोर कोर्ट्स' के आस पास फिर लड़ाई शुरू हो गयी। 'फोर कोर्ट्स' का भवन तोड़ दिया गया। भवन से बड़ा धुंआ निकल रहा है और छतमें छिद्र हो गया है तो भी यह वास्तविक दुर्ग का काम दे रही है। किले के भीतर से गोलियां चलायी जा रही हैं। वे धीमी चल रही हैं पर इस पर भी बाहरी सेना भीतर नहीं आने पा रही है।

स्त्रियों की सहायता

जनरल ओकानर के निःसन्देह बहुत से अनुयायी हैं और वे घेरे हुओं की सहायता करने को उत्सुक हैं। इन सहायकों में बहुत सी स्त्रियां हैं जिन्होंने ब्रिटिशरों के विरुद्ध लड़ाई में सिनफिनरों की बड़ी सेवा की है।

देहातों की स्थिति।

देहात में क्या हो रहा है इस सम्बन्ध का कोई निश्चित समाचार नहीं मिल रहा है। किन्तु इन देहात में प्रजातंत्र वादियों का बड़ा जोर है। स्वतंत्र राष्ट्र के कर्मचारी शीघ्रता से यह प्रयत्न कर रहे हैं कि प्रजातंत्र वादियों की सहयता में सेना न पहुंच सके इससे रेलगाड़ियां चलती बन्द हो गयी हैं तथा सड़कों पर गाड़ियों का आना जाना रुक गया है। शहर के चारों तरफ घेरा जैसा पड़ गया है तो भी सहायता में कुछ सेना शहर में पहुंच गयी है। एक मोटरगाड़ी पर जिस में फिलडेअर के बागी भरे हुए थे, फोर कोर्ट के पास गोली चलायी गयी और सरदार पर गोली लगने से वह मर गया।

अंतिम खबर कि वीर डी० वेलरा ज़ख्मी हो गए हैं।

III 921

बहिरेपन

कान बहने, कम सुनने, शब्द होने, जख्म, बर्म, खुशकी परदों की कमज़ोरी व कानों के सर्व रोगों की दवा, करामात तैल है मूल्य फी शीशी १) १४' ।—। अपना पता साफ़ लिखें पता: बहिरेपन की दवा।

वल्लभ एण्ड को न० ३ पीलीभीत यू० पी०

आवश्यकता है

राजस्थान क्षत्रिय महासभा को तीन उपदेशकों की आवश्यकता है। प्रार्थना पत्र कम से कम वेतन सहित पहली अगस्त सन २२ ई० तक आजाने चाहियें।

उक्त सभा की तरफ से अजमेर में एक बोर्डिंग हाउस खोलागया है जो राजपूत सज्जन अपने कुमारों को अजमेर में पढ़ाना चाहें तो उनको उक्त बोर्डिंग हाउस में रख सक्ते हैं। पत्र-व्यवहार मंत्री से करें।

मंत्री, कुं० सज्जनसिंह राठौर

राजस्थान का सर्वोच्च एक मात्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

नवीन राजस्थान ३) में

यदि आप प्रति सप्ताह कवियों की ओजस्वी एवं भावमयी कवितायें पढ़ना चाहें सारगर्भित लेख, निष्पक्ष टिप्पणियां और देश विदेश विशेष कर राजस्थान के समाचार जानना चाहें। साथही महिला संसार, अंतर-राष्ट्रीय परिस्थिति और अन्यान्य विषयों पर जोरदार और मार्मिक लेख पढ़ना चाहें तो शीघ्रता करें क्योंकि एक मित्र ने हमारे पास २००) रुपये इसलिए भेजे हैं कि ४०० नयग्राहकों को एक वर्ष के लिए नवीन राजस्थान ३) में दिया जाय

व्यवस्थापक

अपूर्व राष्ट्रीय ग्रन्थ

पंजाब भीषण नरहत्या काण्ड

देशपूज्य महात्मा गांधी, देशबन्धु दास पं० मोतीलाल नेहरु, पं० मदनमोहन मालवीय आदि सर्वमान्य नेताओं ने जांचकर मार्शलला के समय में पंजाब के महा भयङ्कर अत्याचारों की, जल्यानवाला बाग के भीषण हत्याकाण्ड की जो रिपोर्ट लिखी थी उसी के आधार से यह ग्रन्थ तैयार किया गया है। अपूर्व ग्रन्थ है इसे पढ़कर आप रो उठेंगे. सचित्र ग्रन्थ का मूल्य केवल ।।।=)

देश-पूजा में आत्मबलिदान

पंजाब के ख्यात देशभक्त भाई परमानन्दजी एम. ए. ने इस अपूर्व ग्रन्थ की सृष्टि की है. भाईजी ने कालेपानी से लौटकर यह ग्रथरत्न लिखा है जिन महात्माओं ने जिन वीर देश भक्तोंने— जिन मनस्वी देवियों ने प्यारे देश की पूजा में आत्मबलिदान किया है, उन्हीं का इसमें भावशाली वर्णन है. एक स्वार्थत्यागी महात्मा और देशभक्त का लिखाहुआ यह चरित्र अवश्य पढ़िये मूल्य १)

प्रोप्राइटर
"हिंदी राष्ट्रीय ग्रन्थमाला,,
अजमेर।

राजनैतिक जगत् में सनसन फैलाने वाला

२००० रू की जमानत देकर

कर्त्तव्य

फिर निकलने लगा

यदि आप निर्भीक टिप्पणियां, ओजस्विनी कवितायें, प्रति सप्ताह के देश, विदेश के ताजे समाचार और मार्मिक लेख देखना चाहते हों तो आज ही ३) मनीआर्डर से भेज कर ग्राहक हो जाइये क्योंकि यह पत्र देश धर्म और समाज की सेवा करता हुआ राजनैतिक संसार में अपूर्व और अभूत पूर्व जागृति उत्पन्न कर पश्चिमीय सभ्यता और पश्चिमीय शासन की बेढंगी लहरों से देश को बचाने में पूर्ण शक्ति से काम कर रहा है इस लिये गरीबों के झोंपड़ों से लेकर राजमहलों तक में इसे बालक, वृद्ध, युवा, स्त्री पुरुष, आदि सभी बड़े प्रेम से पढ़ते व सुनते हैं, इस के व्यापार समाचार बड़े मार्के के होते हैं, प्रति सप्ताह एक गल्प भी रहती है औरहर तीसरे मास एक विशेषांक भी निकलता है। इतनी विशेषतायें होने पर भी वार्षिक मूल्य ३) वी. पी. से ३।) में पड़ेगा। नमूना मुफ्त मंगा देखिये।

व्यवस्थापक "कर्त्तव्य,, इटावा

(यू० पी०)

भरतपुर राज्य में स्वदेशी प्रचार

भरतपुर राज्य में हर प्रकार की सभा वगैरह करने की स्वतंत्रता तो राज्य ने छीन ही रक्खी है परन्तु फिर भी राज्य की प्रजा जिस प्रकार स्वदेशी का प्रचार कर रही है शायद ही किसी अन्य राज्य में ऐसा प्रचार हो। श्रीमान् भरतपुर नरेश को यहां पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रहा जा सकता क्योंकि आपका स्वदेशी पर बड़ा प्रेम है। भरतपुर राज्य में स्वदेशी वस्त्रों के कई कारखाने खुल गये हैं जो आपकी कृपा से निर्विघ्न चल रहे हैं। इन में ऐसे २ उत्तम कपड़े बनाये जाते हैं कि उन्हें देख कर विदेशी वस्त्रों के व्यापारी दांतों तले अंगुली दबाते हैं। श्रीमान् दर्बार तथा उनकी माताजी भी समय समय पर स्वयं भरतपुर के बने कपड़े पहिन कर प्रजा को अनुकरण करने की सुविधा देते हैं ताकि हर एक राज्य निवासी अपने यहां का ही बना हुआ वस्त्र पहिना करे। श्रीमान् ने ... दफ़ा इन कारखानों का निरीक्षण किया है और उनकी कला कौशल की प्रशंसा भी की है। हर एक सुअवसर पर राज्य की ओर से कार्यालयों को चरखे और करघे पुरस्कार में दिये जाते हैं। यहां ईक स्थानों में अच्छा अच्छा कपड़ा बन बन कर बाहर जा रहा है। यहां पर कोई भी गृह ऐसा न निकलेगा जिसमें कि सुदर्शन चक्र द्वारा सूत निकलता न हो। इस शहर में २५६ घरों में करघे चल रहे हैं। खद्दर का प्रेम स्वयं ही हर राज्य निवासी के हृदय में बढ़ता चला जा रहा है। हम केवल इस कार्य के विषय में जितनी भी प्रशंसा श्रीमान् भरतपुर नरेश की करें उतनी ही थोड़ी है।

सम्वाददाता

भीलवाड़ा

अभी कुछ दिन हुए एक दफे और बिजोलियां जाने को फौजें आने वाली थी उसके लिए पहले की तरह फिर गाड़ी घोड़ा ऊंट वाले राज वालों से खूब तंग किए गये यहां तक कि क़रीब १५ दिन तक बिचारे करीब २० ऊंट गूजरों के रोक दिये। जब उन्होंने न तो फौज़ ही आते देखा और न अपना छुटकारा ही तो, तंग आकर मिया अबदुललतीफ के पास अर्जी लेकर गये। उस पर उनको गालियां घुड़कियां मिली आखिर २०) नज़राना लेना मंजूर होकर ऊंटों की रिहाई की हामी भरी गई तदनुसार गूजर २०) रु० लेकर पहुंचे तो मियां साहब ने फरमाया कि हम तुम लोगों से सिर्फ १० ही लेंगे परन्तु एक काम तुमको करना होगा कि हमारा करीब ५००) रुपयों का नाज लिया हुआ बेगूं पड़ा हुआ है वो इसको यहां ला देना होगा। बेचारे करते भी तो क्या! कल ता० ११-६-२२ को सुबह बेगूं नाज लेने को रवाना होगये। देखते हैं एक ऊंट का किराया करीब ४) रुपया होता है और आप क्या इनाम देते हैं? सुनते हैं यह अनाज जैसे कि ख्यालीलाल नलवाया अबदुललतीफ नायब साहब वगैरह चार पांच आदमियों के साझे में है। उदार कहाने वाले हाकिम के सामने ऐसे ऐसे अत्याचार कर्मचारी लोग करते हैं।

संवाददाता

न्यूज़ीलैण्ड में भारतीयों का प्रवेश निषेध

सन् १९२० के पहले न्यूज़ीलैण्ड में हिन्दुस्थानी जा सकते थे। हां, जहाज़ से उतरने पर अंग्रेज़ी में उनकी परीक्षा ली जाती थी। इसके बाद यह नियम बनाया गया कि जिस आदमी को न्यूज़ीलैण्ड सरकार अपने यहां बसने योग्य समझे उसी को अपने देश में प्रवेश करने की आज्ञा दे। इस योग्यता का निर्णय चुंगी विभाग के मंत्री पर छोड़ दिया गया। ये मंत्री साहब भारतियों के विरुद्ध किस कठोरता के साथ अपने इस अधिकार का प्रयोग करते हैं इसका पता न्यूज़ीलैण्ड के एक समाचार पत्र से चलता है। यह पत्र लिखता है "पहले सिडनी यां फ़िज़ी से आने वाले प्रत्येक जहाज़ में अनेक भारतीय आया करते थे लेकिन अब दो या तीन हिन्दुस्थानी आते हैं या कोई भी नहीं आता।

जो हिन्दुस्थानी न्यूज़ीलैण्ड में जाना चाहते हैं उन्हें वहां की सरकार के पास पहले एक प्रार्थनापत्र भेजना पड़ता है वहां से एक फार्म आजाता है। खानापूरी करके यह फार्म डाक्टरी सर्टीफिकेट और पुलिस या अन्य सरकारी अफसर के प्रमाणपत्र के साथ फिर न्यूज़ीलैण्ड भेजा जाता है। चुंगी विभाग के मंत्री इन प्रार्थनापत्रों का फैसला करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि उनका यह फैसला प्रायः हिन्दुस्थानियों के खिलाफ ही होता है। इन मंत्री साहब का भेजा हुआ एक विचित्र पत्र अभी एक सज्जन ने हमारे पास भेज दिया है। वज़ीरसिंह, गुलाब, रामरखा और शंकर रामदत्त नाम के चार हिन्दुस्थानी न्यूज़ीलैण्ड को जाना चाहते थे। उनके प्रार्थनापत्र के उत्तर में २० जुलाई १९२१ के पत्र में मंत्रीजी लिखते हैं "जिन जिलों में ये लोग रहते हैं उन जिलों के निवासियों के लिये न्यूज़ीलैण्ड का जलवायु तथा यहां की परिस्थिति अनुकूल नहीं है, अतएव उनके ही स्वार्थ का ख्याल करके यह उचित समझा गया है कि वे न्यूज़ीलैण्ड में नहीं आवें। इस हालत में हमें अफसोस है कि उन्हें यहां घुसने की आज्ञा नहीं मिल सकती" क्या बढ़िया तर्क है। आस्ट्रेलिया, कनाडा, और दक्षिण अफ्रिका में तो घुसने की आज्ञा हमें पहले से ही नहीं थी अब न्यूज़ीलैण्ड ने भी अछूत समझ कर अपना दरवाज़ा हमारे लिये बंद कर दिया। साम्राज्य में हमारी यही इज्ज़त है! क्या इसी साम्राज्य के नागरिक होने का हम अभिमान करें?

सत्याग्रह-आश्रम } बनारसीदास चतुर्वेदी
साबरमती }

भैंसरोड़ में भीषण दमन।

एक आदमी लापता : गांव लूटे जा रहे हैं!!

मेवाड़ के भैंसरोड़ ठिकाने की जनता भी अपने कष्ट दूर कराने के लिए कई मास से प्रयत्न कर रही है, यह समाचार पत्र के पाठक भलीभांति जानते हैं। हाल में यहां भी दमन बड़े ज़ोरों से आरंभ हुआ है। लोगों से पीट पीट कर विवश करके बेगार ली जाती है और हांसिल वसूली के नाम पर उनके घर लूटे जा रहे हैं। बहुत से लोग बिना कोई अपराध बताए या लगाए जेलों में ठूस दिए गए हैं और स्त्रियां अपमानित की जा रही हैं।

लूटे हुए माल को हज़म

करने के लिए एक और तरकीब काम में लाई जा रही है, वह यह है कि मामूली चीजे के नाप से आधे नाप की ज़रीब बनाकर खेत नापे जा रहे हैं ताकि दुगुने हो जायं और इस प्रकार दुगुना लगान वसूल किया जा सके। ज़मीन नापने वाले और लूटने वाले सवार लोगों से खुराक खर्च आदि मुफ्त वसूल कर ले रहे हैं। न देने पर इस आवश्यकता की

III 859

पूर्ति भी लूटपाट द्वारा की जाती है। जिन लोगों पर आंदोलन में अधिक भाग लेने का सन्देह है उनके लिए कर्मचारी कहते फिरते हैं कि उन्हें गोली से मार देने का हुक्म हमें मिल गया है। किसानों के घरों में १ दाना खाने को भी नहीं छोड़ा जा रहा है। यदि वे कुछ कहते हैं तो कहा जाता है कि पथिक के पास जाओ!

बाकापुरा का लक्खा किसान भैंसरोड़ में क़ैद कर दिया गया था एक दिन रात को ९ बजे उसे वहां से सिपाही ले गए। उसके बाद वह लौट कर हवालात में नहीं आया। दूसरे पंच क़ैदियों ने पूछा तो नौकरों ने जवाब दिया कि भीतर की जेल में है। किन्तु धीरे धीरे पता चला कि वहां भी नहीं है, अन्त में अपने आप ही यह अफ़वाह बड़े ज़ोरों से फैली कि वह

मार डाला गया

है। इस मामले की जांच करने को कुवाखेड़ा से थानेदार आए हैं, देखें क्या होता है? इन घटनाओं से लोगो में असन्तोष अधिकाधिक बढ़ता जाता है और वे देश पड़त रख देने का विचार कर रहें है!

एक भैंसरोड़ निवासी।

बूंदी का दमन कांड!

अधिकारियों की करतूत!

बूंदी राज्य ने अपने राक्षसी कृत्यों में सब से बाज़ी मार ले जाना निश्चय कर लिया प्रतीत होता है। यह राज्य अंधेर खाते के लिये राजपुताने की सब रियासतों से अधिक प्रसिद्ध है। नरेश या तो शराब से प्रेम रखते हैं या आरामसे। आप प्रजा की सुविधाओं का कितना ध्यान रखते हैं यह आपको बताने की आवश्यकता नहीं। पुत्र देहान्त के बाद उदासीनता की आड़ लेकर रिश्वती और प्रजापीडक हिंसक नौकरों के हाथ में जनता की बागडोर दे रक्खी है। इन नौकरोंने हज़ारों चोर आबाद कर रक्खे हैं जो जनता को लूटते हैं और इन्हें खुश रखते हैं। दरबार तक किसी की पहुंच ही नहीं। महीनों लोग बिना कोई अपराध लगाए कैद रक्खे जाते हैं। दरबार खुद साफ़ा बांधते हैं उनके टुच्चे नौकर भी बांधते हैं किन्तु जनता साफा नहीं बांध सकती। कपड़े पहनने में भी वह आज़ाद नहीं। इंफ्लुएंज़ा के दिनों में लकड़ी इतनी महंगी थी कि एक मुर्दे के लिये ८०) लगते थे। सहस्त्रों गरीब लाशों को योंही पटक आते थे। उस अवस्था में भी आसपास के जंगल की रखत उस समय तक नहीं उठाई गई जब तक कि लोगों ने दस बीस मुर्दे महलों के आसपास न जा पटके! लड़ाई का चन्दा भी "बिल्ली के भाग्य से टूटने वाला छींका" बन गया।

युद्ध का चन्दा

एक स्थायी टैक्स बना दिया गया है। बेगार और दूसरे टैक्सों के मारे जनता का पहलेही नाक में दम था अब युद्धऋण ने और भी बोझ बढा दिया। फिर भी जनताने बहुत ही शांतिपूर्वक इन बातों का विरोध शुरू किया। किन्तु शांति का जवाब दिया जा रहा है पैशाचिकता से। क्यों न हो! शांत ही सही। है तो विरोध ही। भला ईश्वर के अंश-नहीं २ साक्षात ईश्वर और उनके गण इस धृष्टता को कैसे सहन कर सकते थे।

प्रजा ने इस समय जो शांत सत्याग्रह उठाया है और बेगार देने से इन्कार किया है उसे दुष्ट कर्मचारी किस रूप में नरेश और अंग्रेज पदाधिकारियों के सामने रखते हैं यह ओ० मदनमोहनजी बोहरा की बातों से ही प्रगट हो गया है। आपने सदलबल डाबी पर चढाई कर के लोगों से इस प्रकार बात चीत की:—

प्र०—तुम लोगों ने सर्कारी इश्तिहार पढा या नहीं?

किसान—हम लोग पढे नहीं है इसलिये यह नहीं जान सके कि उसमें क्या है?

प्र०—अच्छा जब सुपरिन्टेण्डेण्ट ने तुम्हें सभा करने से रोक दिया तो तुमने सभा क्यों की?

किसान—हम सभा कहां करते हैं, हम तो हमारी पंचायत करते हैं।

प्र० तुम दर्बार को मानते हो या नहीं?

किसान—दर्बार तो हमारे धणी (स्वामी) हैं हम उनके लड़के लड़की हैं?

प्र०—तब तुम क्या चाहते हो?

किसान—हम अपने दुख दूर कराना चाहते हैं।

प्र०—तुम्हारी तकलीफें सुनने को तुम्हें निमाणे में बुलाया था तुम लोग वहां क्यों नहीं आए?

किसान—आपने वहां दुकानदारों को यह हुक्म दे दिया था कि किसानों को कोई खाने पीने की चीज मत बेचना इस से सब दूकानें बन्द थीं—हड़ताल सी थी और साथ ही यह खबर फैल रही थी कि वहां जो जायगा उसे पकड़ लेंगे, इन्हीं दोनों कारणों से नहीं आए।

प्र०—जब तुमको इतना मालुम था कि आन्दोलन करने वालों के साथ रियासत ऐसा बर्ताव करती है तो फिर तुम ने सभा क्यों की?

किसान—हमने सभा नहीं की पंचायत की थी और वह अपने दुखों को दूर कराने का विचार करने के लिये। पंचायत कुछ छिप कर नहीं की थी पंचायत के चारों ओर राज के सशस्त्र आदमी घेरा दिए हुए थे।

इन प्रश्नोत्तरों के बाद डाबी में जितने आदमी बातचीत करने को बुलाए गए थे सब मुश्कें बंधवा कर गिरफ़ार कर लिए गए।

इन में एक महाजन किशनलाल नामक था। इसे ५—६ वर्ष पहले चोरों ने बहुत मारा था तब से इसकी टांगे बेकार होगई थीं। इसी कारण इस समय राज्य वालों के आज्ञा देने पर भी वह चल न सका फलतः वह घसीटा गया और उसकी कमर में बन्दूकों के कुन्दों और संगीनों की चोटें मारी गईं जिससे वह लोहलुहान होगया और तब वहीं छोड़ दिया गया।

इन सब बातों से पता चलता है कि अधिकारी दर्बार या उच्चाधिकारियों को यह बतलाते हैं कि आन्दोलक दर्बार को नहीं मानते और इसी प्रकार की सभा करते हैं आदि, और हमेशा नौकरों की बातों पर विश्वास करने वाले लोग भी इन बातों के आधार पर दमन की आज्ञा दे देते हैं? प्रश्न यह है कि क्या इस प्रकार कानों सुनी बातों के आधार पर काम करने वाले और खुद कुछ भी तकलीफ़ न उठाने वाले लोग इस क़ाबिल हैं कि उनके अकेले स्वेच्छाचारी हाथों में जनता के भाग्य की बागडोर रहे!

III 923

प्रयाग महिला विद्यापीठ

सूचना

इस विद्यापीठ ने पांच ही महीने में संतोष जनक सफलता प्राप्त की है। विद्या-विनोदिनी परीक्षा के १८ केन्द्र बन गये हैं और लगभग १२० परीक्षार्थिनियों के आवेदन पत्र आगये हैं।

इस समय विद्यापीठ विदुषी परीक्षा के लिए पाठ्य विषयों को निश्चित करने तथा परीक्षा सम्बन्धी नियमों के बनाने पर विचार कर रहा है। विद्याविनोदिनी के पश्चात् विदुषी का कोर्स तीन वर्ष का होगा। निम्न लिखित पाठ्य विषयों के रखने का प्रस्ताव हो रहा है:— हिन्दी, उर्दू, बंगाली, गृहशास्त्र और स्वास्थ्य रक्षा जिसमें समाज शास्त्र और मनोविज्ञान शामिल है, गणित, विज्ञान, दर्शन, धर्मशास्त्र, अर्थ शास्त्र संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी, शरीर रचना, संगीत, द्वितीय भारतीय भाषा, इतिहास, ड्राइङ्ग, भूगोल, वैद्यक। अब प्रश्न यह है कि इन विषयों में कुछ और अधिक विषय बढ़ाये जायं या इनमें से कौन कौन से विषय निकाल दिये जायं। परीक्षार्थिनियों को कितने विषयों का लेना उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक समझा जाय। कौन कौन से विषय बाध्य हों और कौन कौन से ऐच्छिक। पूरे कोर्स में एक ही परीक्षा लीजाय या इसके तीन खंड किये जायं और प्रत्येक खंड की परीक्षा पृथक पृथक हो और प्रत्येक खंड का प्रमाण पत्र दिया जाय, और तीनों खंडों के समाप्त होने पर विदुषी की उपाधि दी जाय। क्या यह भी सुभीता देने की आवश्यकता है कि परीक्षा प्रत्येक वर्ष हो और परीक्षार्थिनी एक या दो विषय ले कर परीक्षा दे सके और उस विषय में उस को प्रमाण पत्र दे दिये जायं। और सम्पूर्ण विषयों के समाप्त होने पर उपाधि दी जाय।

सब विद्वान तथा विदुषियों से प्रार्थना है कि इन प्रश्नों तथा इस से सम्बन्ध रखने वाले सब प्रश्नों पर अपनी सम्मति लिख कर मेरे पास भेजदें। जिस में परीक्षा अत्योपयोगी और सर्व प्रिय हो।

भवदीय

मजीद उद्दीन अब्बासी

रजिष्ट्रार

कुछ उत्तम पुस्तकें

१— राजस्थान और देशी राज्य दर्शन (देशी रियासतों की वर्तमान दशा का सच्चा चित्र) मूल्य बे जिल्द का १।)। जिल्द दार का १॥)।
२— (स्वदेशी पर म० गांधी) (स्वदेशी की महिमा और लाभ) मू० ॥)
३— पंजाब का भीषण नर हत्याकाण्ड। ॥≤)
४— राष्ट्रीय संदेश (स्वामी राम तीर्थ) मू० ॥।)
५— आयरलैण्ड की राज्य क्रांति (वीर श्रेष्ठ मैकस्वीनीके चित्र सहित ।) मू० ।)
६— वीर विनोद (महा भारत के कर्ण पर्व का छन्दोबद्ध अनुवाद) मू० २)
७— रसराज (हिन्दी साहित्य का प्रसिद्ध ग्रंथ) मू० ।-)
८— विविध संग्रह (राजपूताना की वीररसपूर्ण कवितायें) मू० ॥।)
९— राष्ट्रीय मणि (त्रिशूल की कवितायें।) मू० ॥)
१०— स्वराज्य वीणा (देश भक्ति की कवितायें) ॥≤)
११— अमेरिका दिग्दर्शन (स्वा० सत्यदेव) १)
१२— भारत को स्वाधीनता का संदेश १।)
१३— बोलशेविज्म (रूस का नव जन्म) १।≤)
१४— नवयुवकों स्वाधीन बनो (उपदेश) ॥)
१५— राजस्थान में बेगार -)
१६— राष्ट्रीय गान (जोशीले भाव पूर्ण गायन) -)

पता— राजस्थान साहित्य भण्डार

राजस्थान सेवा संघ, अजमेर

बूंदी राज्य में

स्त्रियों पर अत्याचार!

बूंदी रियासत के अधिकारियों ने किसानों की जागृतिको किस प्रकार दबाया, ग़रीब जनता को किस तरह दमन की चक्की में पीसा और निर्दोष स्त्रियों को भालों से छेद २ कर मारा, इसका लोमहर्षण वृत्तांत। हर एक देश प्रेमी, और न्यायवान् व्यक्ति को इसे पढ़ना चाहिये।

प्रचार के लिये इसका दाम असली लागत से भी कम रक्खा गया है।

क्राउन ८ पेजी के १८ पृष्ठों (ढाई फार्म) की किताब का दाम सिर्फ तीन पैसा है। बांटने वालों को १) रु० की २५ या ३॥) रु० की १०० प्रतियां दी जायंगी।

एक प्रतिके लिये ५ पैसे का टिकट आना चाहिये।

पता—राजस्थान सेवा संघ, अजमेर

III 524

बहिरेपन

कान बहने, कम सुनने, शब्द होने, जख्म, वर्म, खुशकी परदों की कमज़ोरी व कानों के सर्व रोगों की दवा, करामात तैल मूल्य फी शीशी १।) Rs 1—4 अपना पता साफ़ लिखें पता: बहिरेपन की दवा। वल्लभ एण्ड को नं० ३ पीलीभीत यू० पी०

आवश्यकता है

राजस्थान क्षत्रिय महासभा को तीन उपदेशकों का आवश्यकता है। प्रार्थना पत्र कम से कम वेतन सहित पहली अगस्त सन २२ ई० तक आजाने चाहियें।

उक्त सभा की तरफ से अजमेर में एक बोर्डिङ्ग हाउस खोलागया है जो राजपूत सज्जन अपने कुमारों को अजमेर में पढ़ाना चाहें तो उनको उक्त बोर्डिंग हाउस में रख सक्के हैं। पत्र व्यवहार मंत्री से करें।

मंत्री, कुं० सज्जनसिंह राठोर

राजस्थान का सर्वोच्च एक मात्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

नवीन राजस्थान ३) में

यदि आप प्रति सप्ताह कवियों की ओजस्वी एवं भावमयी कविताएं पढ़ना चाहें सारगर्भित लेख, निष्पक्ष टिप्पणियां और देश विदेश विशेष कर राजस्थान के समाचार जानना चाहें। साथही महिला संसार, अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति और अन्यान्य विषयों पर जोरदार और मार्मिक लेख पढ़ना चाहें तो शीघ्रता करें क्योंकि एक मित्र ने हमारे पास २००) रुपये इसलिए भेजे हैं कि ४०० नवग्राहकों को एक वर्ष के लिए नवीन राजस्थान ३) में दिया जाय

व्यवस्थापक

हिंदी-नवजीवन

(साप्ताहिक राष्ट्रीय विचार-पत्र)

संस्थापक—म० मोहनदास करमचंद गांधी (जेल में)

यदि आप महात्मा गांधी के सत्याग्रह का मर्म, स्वराज्य-संग्राम का बल और असहयोग-आन्दोलन की महिमा जानना चहाते हों तो 'नवजीवन' के ग्राहक तुरन्त हो जाइए। अग्रिम वार्षिक मूल्य रु० ४) एक प्रति का -)।

व्यवस्थापक "हिन्दी-नवजीवन"
अहमदाबाद

मदन मञ्जरी

बिजली की तरह पहिले ही दिन फ़ायदा बताने वाली यह गोलियां रक्त को शुद्ध करतीं, धातु को पुष्ट करतीं, पाचन शक्ति सुधार दस्त को साफ़ लाती हैं और नामर्दी का नाश कर सच्चा व कायमी पुरुषत्व बख्शती हैं। म० ४० वाली रु० १)

मुफ्त सूचीपत्र मुफ्त

वैद्यकीय राय
राजवैद्य नारायण जी केशव जी।
हैड आफिस जाम नगर, काठियावाड़

अपूर्व राष्ट्रीय ग्रन्थ

पंजाब भीषण नरहत्या काण्ड

देशपूज्य महात्मा गांधी, देशबन्धु दास पं० मोतीलाल नेहरु, पं० मदनमोहन मालवीय आदि सर्वमान्य नेताओं ने जांचकर मार्शलला के समय में पंजाब के महा भयङ्कर अत्याचारों की, जल्यानवाला बाग के भीषण हत्याकाण्ड की जो रिपोर्ट लिखी थी उसी के आधार से यह ग्रन्थ तैयार किया गया है। अपूर्व ग्रन्थ है इसे पढ़कर आप रो उठेंगे. सचित्र ग्रन्थ का मूल्य केवल ॥।≈)

देश पूजा में आत्मबलिदान

पंजाब के ख्यात देशभक्त भाई परमानन्दजी एम. ए. ने इस अपूर्व ग्रन्थ की सृष्टि की है. भाईजी ने कालेपानी से लौटकर यह ग्रंथरत्न लिखा है जिन महात्माओं ने जिन वीर देश भक्तोंने— जिन मनस्वी देवियों ने प्यारे देश की पूजा में आत्मबलिदान किया है, उन्हीं का इसमें भावशाली वर्णन है. एक स्वार्थत्यागी महात्मा और देशभक्त का लिखाहुआ यह चरित्र अवश्य पढ़िये मूल्य १)

प्रोप्राइटर
"राष्ट्रीय ग्रन्थमाला,,
अजमेर।

हिन्दी केसरी

(लोकमान्य तिलक के केसरी का हिन्दी संस्करण)

जोरदार साप्ताहिक पत्र। बड़ा आकार। मूल्य ३) मनिआर्डर से पेशगी आना चाहिये। नमुना -) के टिकट आये बिना नहीं भेजा जाता। आज ही ग्राहक बनिये।

सम्पादक—महावीर प्रसाद गहमरी
पुरुशोतमराव धामणकर बी० ए०

पताः—हिन्दी-केसरी, आर्ट प्रेस बनारस-सिटी।

एस० एल० गुप्त द्वारा 'नवीनराजस्थान प्रेस अजमेर से मुद्रित और प्रकाशित।

बहिरेपन

कान बहने, कम सुनने, शब्द होने, जख्म, वर्म, खुशकी परदों की कमज़ोरी व कानों के सर्व रोगों की दवा, करामात तैल है मूल्य फी शीशी ।ऽ Rs 1—। अपना पता साफ़ लिखें पताः बहिरेपन की दवा।

वल्लभ एण्ड को नं० ३ पीलीभीत यू० पी०

UNIQUE OPPURTUNITY.

LOANS without interest and security. WANTED spare time agents. Apply Chief Agents, M. C. S. Life and marriage Assurance Co. Ltd.

Nasirabad [Rajputana

राजस्थान का सर्वोच्च एक मात्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

नवीन राजस्थान ३) में

यदि आप प्रति सप्ताह कवियों की ओजस्वी एवं भावमयी कविताएं पढना चाहें सारगर्भित लेख, निष्पक्ष टिप्पणियां और देश विदेश विशेष कर राजस्थान के समाचार जानना चाहें साथही महिला संसार, अंतर-राष्ट्रीय परिस्थिति और अन्यान्य विषयों पर जोरदार और मार्मिक लेख पढना चाहे तो शीघ्रता करें क्योंकि एक मित्र ने हमारे पास २००) रुपये इसलिए भेजे हैं कि ४०० नए ग्राहकों को एक वर्ष के लिए नवीन राजस्थान ३) में दिया जाय

व्यवस्थापक

नम्बर १

समन बगर्ज़ इन्फ़साल मुक़दमा

[आर्डर ६. कायदा १ व ६]

अनवान

खूबचन्द गुमानमल महाजन बाज़ार आबू बनाम गोगालाल मंगलचन्द महाजन साकिन ब्यावर—

बनाम गोगालाल मंगलचन्द महाजन साकिन ब्यावर

वाज़े हो कि खूबचन्द गुमानमल महाजन ने तुम्हारे नाम एक नालिश बाबत १०१५) रुपये की दायर की है। लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि तुम तारीख़ १६ माहजून सन् १९२२ई, वक्त दस बजे दिन असालतन् व मारफ़त वकील के जो मुक़दमें की हालत से क़रार वाक़ई वाकिफ़ किया गया हो और जो कुल अमूर अहम मुतालिक़ा मुक़दमा का जवाब दे था जिसके साथ कोई शख्स हो कि जवाब ऐसे सवालात का दे सके हाज़िर हो और जवाबदेही दावा की करो। और हरगाह देही तारीख़ जो तुम्हारी हाज़िरी के लिए मुकर्रर है। वास्ते इन्फ़साल क़तई मुकदमा के तजवीज हुई है पस तुमको लाज़िम है कि उसी रोज़ अपने जुम्ला गवाहों को हाज़िर करो और नीज़ जुम्ला दस्तावेज़ात जिन पर तुम बताइद अपनी जवाब देही के इस्तकलाल देना चाहते हो उसी रोज़ पेश करो और तुमको इत्तला दी जाती है कि अगर बरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुक़दमा बग़ैर हाज़िरी तुम्हारी मस्मू और फ़ैसल होगा।

इतला

(१) अगर तुमको यह अन्देशा हो कि तुम्हारे गवाह अपनी मर्ज़ी से हाज़िर न होंगे तो तुम अदालत हाज़ा से समन बायेन मुराद जारी करा सकते हो कि जो गवाह हाज़िर न हो वह जबरन हाज़िर कराया जाय। और जिस दस्तावेज़ को किसी गवाह से पेश कराने का तुम इस्तहक़ाक़ रखते हो वह उससे पेश कराई जाय। बशर्ते कि तुम खर्चा ज़रूरी अदालत में दाखिल करके इस अमर की दरख्वास्त गुज़रानो।

अगर तुम मतालबा मुद्दई को तस्लीम करते हो तो तुमको लाज़िम है कि रुपया मय खर्चा नालिश अदालत में दाखिल करो ताकि कारवाई इजराये डिगरी की जो तुम्हारी ज़ात या माल या हर सूरत ज़रूरत दोनों पर हो करना न पड़े।

बा सबत मेरे दस्तख़त और मुहर अदालत के आज तारीख २२ माह जून सन् १९२२ ई० को जारी किया गया

Sd. G. B. Walker. Major

डिस्ट्रिक्ट जज. आबू

अपूर्व राष्ट्रीय ग्रन्थ

पंजाब भीषण नरहत्या काण्ड

देशपूज्य महात्मा गांधी, देशबन्धु दास पं० मोतीलाल नेहरु, पं० मदनमोहन मालवीय आदि सर्वमान्य नेताओं ने जांचकर मार्शलला के समय में पंजाब के महा भयङ्कर अत्याचारों की, जल्यानवाला बाग के भीषण हत्याकाण्ड की जो रिपोर्ट लिखी थी उसी के आधार से यह ग्रन्थ तैयार किया गया है। अपूर्व ग्रन्थ है इसे पढ़कर आप रो उठेंगे. सचित्र ग्रन्थ का मूल्य केवल ।।।=)

देश पूजा में आत्मबलिदान

पंजाब के ख्यात देशभक्त भाई परमानन्दजी एम. ए. ने इस अपूर्व ग्रन्थ की सृष्टि की है. भाईजी ने कालेपानी से लौटकर यह ग्रन्थरत्न लिखा है. जिन महात्माओं ने जिन वीर देशभक्तोंने— जिन मनस्वी देवियों ने प्यारे देश की पूजा में आत्मबलिदान किया है, उन्हीं का इसमें भावशाली वर्णन है. एक स्वार्थत्यागी महात्मा और देशभक्त का लिखा हुआ यह चरित्र अवश्य पढ़िये मूल्य १)

प्रोप्राइटर

"हिंदी राष्ट्रीय ग्रन्थमाला,,

अजमेर।

सँवाद दाताओं के पत्र

अजमेर जेल में राजनैतिक कैदियों पर अत्याचार

अब्दुलमजीद राजनैतिक कैदी जबर्दस्ती पागल ठहराया जाकर लाहोर भेजा गया

सर्कार किस प्रकार राजनैतिक कैदियों पर अत्याचार करती है इसका जीता जागता उदाहरण अजमेर जेल के राजनैतिक कैदी अब्दुलमजीद है इन पर जो अत्याचार हुए हैं उससे विदित हो जायगा कि किस प्रकार नौकरशाही असहयोगियों को जड़ से उखाड़ने और बर्बाद करने पर सदा तत्पर रहती है। अजमेर जेल में रामला, गंभीरा वगैरह कई पागल आए हैं और यों ही बिचारे पड़े रहते हैं परंतु राजनैतिक कैदियों का पागलपन हटाने की सर्कार को यकायक सूझी है। अब्दुलमजीद एक नवयुवक १६ वर्ष का बालक है इसके पिता अजमेर पुलिस के सब इन्स्पेक्टर हैं उसको पहिले तो सर्कार ने १२१ दफा में गिरफ़ार कर अजमेर सेंट्रल जेल में भेजा परंतु जब इस दफा में बर्षे पर मुकद्दमा चलाने में कुछ शर्म आने लगी तो एक नोटिस जेल में ही जब वह जेर हवालात था तामिल किया कि तुम फ़तवे बांटते हो जिससे दफ़ा १२४ ताजिरात हिंद के माफिक सर्कार के विरुद्ध बगावत फैलती है इस लिए तुम जाबता फौजदारी की दफ़ा १०८ के अनुसार नेकचलनी की जमानत दो। इस वीर स्वयंसेवक को जेलके अधिकारियों ने माफी मांगने के लिए बहुत फुसलाया। परंतु वह दृढ़ रहा और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के सन्मुख वीर असहयोगी की भांति खूब सवाल जवाब किए और आखिर में जमानत न देने पर उसको ६ माह की सज़ा दी गई। ६ मा: में से करीब ३ माह की सज़ा वह भुगत चुका था इस अर्से में कईबार वह पीटा गया व तनाई कोठरी में भी बंद किया गया परंतु इतना सब होने पर भी वह अपनी प्रतिज्ञा पर अटल बना रहा ता० ६ मई को सायंकाल के ५ बजे इसी जेल के फाटक पर बुलाया गया और अजमेर से लाहोर के पागलखाने में भेजा गया। वह बिलकुल पागल नहीं था, मौलाना मुईनुद्दीन साहब, व मिर्जा अब्दुल कादिर बेग साहब वग़ैरह के साथ रहता था, उनका खाना पकाता था और सब काम करता था। जब उसे फाटक पर से सीधा भेजने लगे तो उसने कई बार जेलर साहब से कहा कि मैं पागल नहीं हूं मुझे मत भेजो परंतु सुनाई नहीं हुई। इसके बाद उसने दरख्वास्त की कि कम से कम मौलाना साहब, मिर्जा साहब, कुं० चांदकरण हाफिजजी आदि मेरे साथियों से तो मिल लेने दिया जाय मगर इसकी भी इजाज़त नहीं दी गई बल्कि उस को पीट और बांध कर जबरदस्ती एक बंद तिरपाल गाड़ी में भेज दिया गया। जेल के सियासी कैदियों से यह बात छिपाई गई जब रात होगई और वह गिरती में बन्द होने नहीं लाया गया तब सब को फ़िक्र हुआ वह बराबर रोज़े रखता था, और ५ वक्त नमाज और रात को रमज़ान की तराबियां पढ़ता था दिनभर के भूखे प्यासे को ज़ालिम कहां ले गए इस का फ़िक्र सब को परेशान करने लगा आखिर को सिपाहियों के मार्फ़त जेलर साहब को इत्तला कराई गई और रात को १० बजे जेलर साहब ने आकर इत्तला दी कि वह लाहोर के पागलखाने में भेज दिया गया। यह गवर्नमेंट का घोर अन्याय है और असहयोगियों को जबरदस्ती पागल बनाने की तरकीब है इसका प्रत्येक समाचार पत्र को आंदोलन करना चाहिए। हमें पूरी आशा है कि लाहोर की कांग्रेस और खिलाफ़त कमेटियां इस पर गोर कर पागलखाने में इस से मिलने को अपना नुमाइंदा भेजेंगी और इन को वहां पर भी पूरी सहायता देंगी और अंत में हम स्वयंसेवक अब्दुलमजीदको उसकी वीरता पर धन्यवाद देते हैं।

सम्वाददाता

करौली राज्य में बेगार

करौली राज्य का नम्बर बेगार के विषय में मेवाड़ से दूसरा ही है और यह राज्य बेगार के लिये प्रसिद्ध है। यहां की प्रजा में से किन किन जातियों को क्या २ बेगार देनी पड़ती है यही हम करौली राज्य में बेगार शीर्षक लेख में जो क्रमशः निकलेगा बतलायेंगे आशा है पाठक इसको ध्यान पूर्वक पढेंगे। वैश्य जाति जो कि व्यापार के लिये प्रसिद्ध है जिसमें कि बड़े २ साहूकार है उस जाति को तो यहां आटा पीसना पड़ता है सरकारी अनाज तो लाना पड़ता है लड्डू बांधने पड़ते हैं। पूरी के लिये लोये करने पड़ते हैं। मालपूआ का घोल करना पड़ता है। परोसगारी करनी पड़नी है। होली के दिन यहां पर फ़ौजका एक चौका होता है जिसमें सैकड़ों मन सूअर और बकरे का मांस पकाया जाता है जिस के लिये महाजनों के परछे लिये जाते हैं और उसमें भी परोसगारी को पकड़े जाते हैं। बिचारों पर कैसी बीतती है, उस पंगत में परोसना पड़ता है जिसमें जिधर देखो उधर ही मांस की प्रदर्शिनी नजर आयगी। राम २ हरि २ करते जाते हैं; नाक में दते जाते हैं; पैर बिगड़ जाते हैं; धर्म-भ्रष्ट होजाना पड़ता है, क्यों! जूतियों के भय से! यह है मजा राज्य में बसने का! इन वैश्यों में जैनी भी हैं। जब कि उनके परछों में मांस पकाया गया और उनसे परुसवाया गया फिर क्या? सिर्फ खिलाना बाकी है! बेगार में कपड़े की पल्ली भी आती है जिन पर लड्डू इत्यादि शेरनी रक्खी जाती है। जब कोई हाकिम या मिहमान आते हैं तब जेवरन दुकान लगवाई जाती है और सस्ती निर्ख पर वस्तुएं लीजाती हैं बल्कि वह चीजें देहात में मांगी जाती हैं जिनका मिलना कठिन होता है। ऐसे समय कर्मचारी खूबही गरम मुट्ठी करते हैं और बनियों को सताते हैं। यहां पर चैत्र मास में कैलादेवी का एक मेला होता है उसमें यात्रीगण देवी पर चढ़ाने को एक २ बालिश्त के तथा कुछ छोटे बड़े ध्वजा के नाम पर कपड़े चढ़ाते हैं वह जबरन् बजाजों को दिये जाते हैं और उन टुकड़ों की॥) आना गज से कीमत वसूल की जाती है यह है जबर्दस्त अन्याय और निरंकुश शासन का नमूना! नहीं नहीं प्रत्यक्ष प्रमाण! इसी तरह कैलादेवी में राख-बताशों का जो ढेर होता है--जिसमें कि आधी राख मिली हुई होती है- वह दी जाती है हलवाइयों को, और उस राख की जमा जोड़ी जाती है शक्कर की। पहिले से जयपुर राज्य की पोल खिलाफ़त थी परंतु इस पोल देवी का असल साम्राज्य यहां भी है कि दी जाय राख और वसूल की जाय शक्कर की जमा! धन्य रे स्वेच्छाचारी शासन! उसी तरीके से कैलादेवी से सहस्रों रुपये के नारियल चढ़ावे में आते हैं वह बनियों पंसारियों की तेज निर्ख पर दिये जाते हैं। एक पुलिस का सिपाही बड़े २ प्रतिष्ठित महाजनों को ऐसे ही पकड़ कर लेजाता है जैसे कि भेड़ वाला अपनी भेड़ों को। इस तरह बेगारों पर यह महाजन लोग यों ही करौती भरे जुती के